गुरु ज़्यों न सज़्हार

(सत्संदेश अक्तूबर क–भ्म से प्रकाशित प्रवचन)

(क) गुरु ज़्यों न सज़्हार, तेरा नर तन बीता भरम में।

संतों की बाणी में वस्फ (बड़ाई) यह है कि बहुत थोड़े लज़्ज़ों में बड़ी पेचीदा गुत्थियों को सुलझा कर ऐसा कर देते हैं कि आसानी से समझ में आ जाये। यह जो मज़मून वह बयान कर रहे हैं इस की बड़ी भारी अहमियत है, साथ ही इस की बड़ी ज़रूरत भी है। हम लोग यहां इकट्ठे हुये हैं, हमारे यहां इकट्ठे होने की गर्ज़ ज़्या है ? हम आदमी हैं, 'आ+दमी' जब तक दम आता रहे हम हैं वरना किस्सा खत्म। सो जब तक दम आता रहे उस अर्से के अंदर अंदर हमें परमार्थ के मुअज़्मे को यानी अपने आप को जानने और परमात्मा से मिलने के इस जन्म मरण के मुअज़्मे को हल करना है। यह है वह लक्ष्य जिस की बदौलत हज़रते इंसान को और जानदारों के मुकाबले में फ़ज़ीलत (बड़ाई) हासिल है। इस के लिए पहली ज़रूरत है कि इंसान अपना आचार नेक पाक पवित्र बनाये, सब से उस का प्यार हो, सदाचार का जीवन हो ताकि दुनिया की यात्रा आसानी से तय हो जाये। हम सब परमात्मा के बच्चे हैं, उसे खुदा कह लो, ईश्वर कह लो, अल्लाह कह लो, अकाल पुरख कह लो। आत्मा उस परमात्मा की अंश है। आत्मा आत्मा का आपस में भाई भाई का ताल्लुक है। इस की ज़ात भी वही है जो परमात्मा की। इस लिए हमारा सब का आपस में प्यार होना चाहिए लेकिन हम अपने आप को भूल बैठे हैं, हमें अपनी असलियत की खबर नहीं। इस लिए हम इस रिश्ते को भी भूल चुके हैं कि आत्मा आत्मा का इंसान और इंसान का आपस में भाई भाई का रिश्ता है। हम इन्द्रियों के घाट पर इंद्रियों का रूप बन गये हैं। इस लिए हमारे दरमियान आपस में तफर्के पड़ गये हैं। हमें चाहिए कि हमारा वह कुदरती और कदीमी रिश्ता जो परमात्मा की तरफ से मौजूद है उसे ताज़ा कर लें। उस पर गौर कर लें तो हमारा आपस में प्यार हो जाये। हम परमात्मा की अंश हैं मगर हमें इस का कोई एहसास नहीं। अगर हम उसे जान लें, उस का ताल्लुक महसूस कर लें तो पहली बात यह होगी कि हमारा सब का आपस में प्यार हो जायेगा या यों कह लो कि सब परमात्मा की याद में लग जायें, अपने आप को पहचान लें, मन इन्द्रियों से अतीत हो जायें तो सब का आपस में प्यार हो जाये। अगर हम इस तरफ मतवज्जा हो जायें तो हमारा आपस में सच्चा दिली प्यार हो और ज्यादा वाजेह लज़्ज़ों में इस तरह कह लीजिए, सब मिल कर अपने पिता की तलाश में लग जायें तो सब का आपस में प्यार होगा कि नहीं।

दुनिया में लोगों ने मालिक की तलाश में कोई कसर नहीं छोड़ी। दरिया, पहाड़, तीर्थ सब छान मारे। ज़रा नज़र मार कर देखो कहां काबा, अरब का तपता हुआ रेगिस्तान, कहां पंजा साहब, कहां पहाड़ की चोटी पर बद्रीनाथ का तीर्थ, कहां कहां पहुंचे लोग प्रभु की तलाश में मगर ज़्योंकि सही मायनों में प्रभु की तलाश नहीं की गई इस लिए बहुत कम लोग ऐसे हैं जिन्हें परमात्मा मिला। जिन्हें परमात्मा मिला वे ज़्या कहते हैं ? सभी महात्मा जिन्हें परमात्मा मिला यही कहते रहे कि वह ईश्वर, परमात्मा तुज़्हारे अंदर है।

घट घट में हर जू बसे संतन कहेयो पुकार॥

अगर परमात्मा घट में है तो अंदर करो तलाश उस की, वह बाहर कहीं कैसे मिलेगा ? चीज़ कहीं हो, तलाश कहीं और किया जाये उसे तो वह कैसे हाथ आये। यह तो हुई एक बात। दूसरी बात यह है कि जब तक ईश्वर मिलता नहीं हम प्यार किस से करें ? परमात्मा से प्यार हो तो हमारा आपस में भाई भाइयों की तरह प्यार भी हो। नबी नू इंसान की हैसियत में हमारा एक ही खानदान और आपस में कुदरती रिश्ता है मगर हम उसे भूल बैठे हैं। हमारा सब का मकसद एक हो तो फिर आपस

में प्यार ज़्यों न हो। शराबी हिन्दू हों, मुसलमान हों, सिख हों किसी भी मज़हब के हों, अमीर हों या गरीब, आपस में किस तरह गले मिलते हैं। हम मंदिरों, मस्जिदों, गुरद्वारों, गिरजों में ज़्यों जाते हैं ? एक ही मकसद है सब का और वह है प्रभु की तलाश। हम सब एक ही के आशिक, एक ही के मुतलाशी हैं तो फिर हमारा आपस में प्यार ज़्यों नहीं ? यह सब तफर्के, यह झगड़े ज़्यों ? इस बात पर विचार करें तो एक ही नतीजे पर पहुंचते हैं और वह यह है कि हमें उस की ज़रूरत ही नहीं और न ही तलाश है। अगर हमारा दिली मकसद उसे मिलना और पाना हो तो फिर आपस में तफर्के ज़्यों रहें। कोई राज़ की तलाश हो तो आपस में प्यार भी हो अब राज़ की बात यह है कि ग्रंथ पोथियों में तो आप ने पढ़ लिया कि वह ईश्वर, परमात्मा जिस की आप को तलाश है, वह हर घट में है, हर इंसान के अंदर है।

घट घट में हर जू बसे संतन कहेयो पुकार॥

इमर्सन कहता है, tap inside, अपने अंदर दाखिल हो लेकिन हम आंख बंद करते हैं तो आगे अंधेरा है। जिस हालत में हम अब हैं यानी प्रजु को हमने देखा नहीं, जिसे देखा नहीं उस से प्यार कैसे हो ? और जब तक हम ने परमात्मा को नहीं देखा उस वक्त तक हम किस से प्यार करें। प्यार उसी से मुमकिन (संभव) है जिसे हम देख सकते हैं, हमजिन्सियत कुदरती खासा है, जो हमारा हमजिन्स है उस से हमारा ताल्लुक, हमारा प्यार हो सकता है। जिस के साथ हमारा जीवन बीता नहीं उस से प्यार हो तो कैसे हो ? पंजाबी में कहते हैं ताल्लुक हंडाना-सोहबत संगत। तो परमात्मा को हम ने देखा नहीं, अब प्यार किस से करें। यह ऐसा मामला है जिस पर ज़रा ठंडे दिल से विचार करने की ज़रूरत है। अब दुनिया की मिसालों को सामने लाइये। जितनी भी चीज़ें हैं यहां, वे सब पांच तत्वों की बनी हैं; आग, पानी, मिट्टी, हवा और आकाश। दुनिया की सारी रचना इन्हीं पांच तत्वों से है। अब यहां इस शज़्द में लज़्ज अजीब आ रहे हैं कि तूने अपना जन्म भ्रम में गंवा दिया। भ्रम किसे कहते हैं ? जिस की असल न हो। दुनिया तलाश कर रही है दरिया, पहाड़, पानी, पत्थर में, ग्रंथ पोथियों के पढ़ने और विचार करने में, यह भ्रम नहीं तो और ज़्या है ? मगर वह परमात्मा कहां ? वह आप के अंदर है। वैसे वह हरजाई है, हर जगह मौजूद है मगर जिसे भी परमात्मा मिला वह घट में मिला।

अब सवाल यह है कि प्यार किस से करें ? तमाम कायनात, हैवानात पांच तत्वों की रचना है। नबातात (सज़्ज़ियात) में एक तत्व प्रबल है और चार गुप्त। उन में पानी का तत्व प्रबल है। साग सज़्ज़ी वगैरा को सुखाओ, मन भर सज़्ज़ी सूख कर सेर भर रह जाती है। पानी के अलावा दूसरे तत्व भी हैं मगर न होने के बराबर। इंसान पांच तत्व पूर्ण है। वह एक तत्व प्रबल सृष्टि यानी तुलसी आदि से प्यार करे तो यह तरक्की हुई या कि पांच तत्व वाला एक तत्व वाले को पूजे। इस के आगे पैदायश है कीड़े वगैरा। इन में दो तत्व प्रबल हैं, आग और मिट्टी। सांप पानी पीते नज़र नहीं आते। कीड़े मकौड़े ऐसी जगह भी पाये जाते हैं जहां मीलों पानी नहीं रहता। अगर हम आदमी सांप की पूजा करें यानी पांच तत्व पूर्ण इंसान दो तत्व वाले की पूजा करे तो ज़्या यह दानाई (बड़ाई) है ? इसी तरह तीन तत्व जिन के प्रबल हैं और वायु तत्व प्रधान है ऐसी सृष्टि में परिंदे (पक्षी) वगैरा आते हैं। इन में आकाश तत्व बहुत कम है। अब पांच तत्व वाला आदमी गरुड़ आदि परिन्दों को यानी तीन तत्व वालों को पूजे तो ज़्या यह गिरावट नहीं। इसी तरह हैवान हैं जिन के चार तत्व प्रबल हैं जैसे गाय। यह सृष्टि इंसान के लिए कार आमद है, इस से फायदा उठाओ मगर वह पांच तत्व पूर्ण इंसान के पूजने लायक नहीं। इस के आगे इंसान है पांच तत्व पूर्ण। अब इंसान इंसान को ज़्यों पूजे ? पांच तत्व तो सब इंसानों में हैं और वे सब आपस में भाई भाई हैं, आत्मा के रिश्ते के लिहाज़ से भी और जिस्म के लिहाज़ से भी सब बराबर हैं। इन में इंसान के पूजने लायक़ इंसान वह हैं जिन्होंने ने अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों की गुलामी से आज़ाद कर लिया, अपनी आत्मा को पहचान लिया उसे अनुभव कर लिया और परमात्मा से जुड़ गये हैं यानी connected (जुड़ी) हैं। हम disconnected हैं। वह उस बैटरी की तरह हैं जो दोनों तरफ से connected (जुड़ी) है, जो दोनों तरफ के पैगाम (सन्देश) दे सकती है। एक कमरे में बीस बैटरियां रखी हों मगर काम वही बैटरी देगी जो connected (जुड़ी) हो। ऐसे महापुरुष जिन्होंने आत्मा को मन इन्द्रियों से आज़ाद कर लिया और परमात्मा से

जुड़ गये हमारे लिए पूजने के काबिल हैं। उन्हें संत कह लो, साधु कह लो, गुरु कह लो। हम उन के पास ज़्यों जाते हैं ? इस लिए कि भई तुम परमात्मा से जुड़े हुए हो, हमें भी जोड़ दो।

कोई जन हर स्यों देवे जोड़॥

इस गर्ज़ से हम उन का अदब करते हैं। इंसानों में अगर कोई इंसान काबिल ताज़ीम (पूजने लायक) है तो वही जो मन इन्द्रियों से आज़ाद हो गया, जिस ने जड़ से चेतन को अलेहदा कर लिया, अपने आप को जान लिया और परमात्मा से जुड़ गया वह दूसरे को भी परमात्मा से जोड़ सकता है। वह कौन हस्ती है ? वह गुरु है, उस का कोई भी नाम रख लो। लफ़्ज़ गुरु बहुत बदनाम हो चुका है। तो कोई और नाम रख लो। अर्ज़ तो ऐसी बेड़ी से है जो connected (जुड़ा) है और जो हमें भी जोड़ सकता है। उस की फज़ीलत बस इतनी ही है, वह मसाला जो उस में है वह आप में भी है। उस में और आप में फर्क़ इतना है कि वह connected (जुड़ा) है और आप को भी जोड़ सकता है। तो जब तक परमात्मा न मिले उस वक्त तक आप के प्यार के लिए ऐसा गुरु है। गुरु, साधु यह लफ़्ज़ बहुत बदनाम हो चुके हैं। इसे बदनाम करने वाले हम खुद हैं, वे लोग जो खुद connected (जुड़े) नहीं, जिन्होंने अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों से आज़ाद नहीं किया, जो परमात्मा से नहीं मिले मगर pose (ढोंग) करते हैं ऐसे लोगों ने परमार्थ का बेड़ा गर्क किया है।

आज हम बीसवीं सदी में रहते हैं जहां हर शै develop (विकास) कर चुकी है, तरक्की कर चुकी है। साईंस अपने कमाल पर है। हवाई जहाज़ और ऐसी दूसरी ईजादें इस तरक्की का निशान हैं।

जिस तरह बाहरी लिहाज़ से साईंस ने तरक्की की है उसी तरह अंतरी लिहाज़ से भी तरक्की हुई है। ईश्वर को पाने के लिए कई साधन रायज़ (खोज) किये गये। अपराविद्या यानी पढ़ना लिखना, दान, पुन्य, तीर्थ, व्रत आदि इन चीज़ों की भी ज़रूरत है, इन से काम लो। हम इन साधनों को denouce (निंदा) नहीं करते। यह इब्तदाई मरहले (शुरुआती कदम) हैं। तीर्थ ज़्या हैं ? जहां किसी महात्मा ने तपस्या की और ईश्वर की गोद में जा बैठे वह जगह तीर्थ बन गई। जहां किसी महात्मा ने पांव रखा वह जगह तीर्थ बन गई। पंजा साहब, पांवटा साहब, हरिद्वार वगैरा यह सब तीर्थ इसी तरह बने।

तो जब तक मालिक न मिले उस वक्त तक प्यार के काबिल हस्ती गुरु है। उसे साधु, संत, महात्मा कुछ कह लो मगर वह सचमुच का महात्मा हो, so called (बनावटी) महात्मा न हो। अब महात्मा और सच्चा महात्मा यह लफ़्ज़ इस लिए कहने पड़े कि आज गुरु ज्यादा मिलेंगे और शिष्य कम। आम कहावत मशहूर है और शायद ठीक भी है कि आज एक कंकर उठाओ तो उस के नीचे से एक गुरु निकल पड़ता है।

सो स्वामी जी महाराज फरमाते हैं ऐ भाई, तू गुरु से प्यार ज़्यों नहीं करता ? वह ही एक हस्ती थी तेरे प्यार करने के लिए। तू अपने जिस्म, स्त्री, बाल बच्चों, दोस्तों, मित्रों और सोसायटी को भी तो प्यार करता है मगर सब में सब से ज्यादा प्रेम करने के लायक गुरु है। जो नाशवान चीज़ें हैं ये प्यार करने के लायक़ नहीं।

जहां आसा तहां बासा, कुदरत का यह अटल कानून जन्म मरण यानी चौरासी के चक्कर को कायम रखने की रूहे रवां (जान) है। इसी कायदे के वमूजब (अुनसार) मुखतलिफ शरीर धारण करता है। इस लिए मर के कहां जानना होता है ? जहां प्यार है बेअज़्तियार वहां जाना पड़ेगा, जहां लगन होगी। इस लिए जो हस्ती जन्म मरण के बंधन से रहित है उस से प्रेम दानिशमंदी (अकलमंदी) है। इस लिए स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि तुम गुरु से प्यार ज़्यों नहीं करते ? तुम ने भ्रम में पड़ कर अपना इंसानी चोला बरबाद कर लिया। पूजा भी तो कहीं एक तत्व, कहीं दो तत्व, कहीं तीन तत्व, कहीं चार तत्व वाले शरीरधारियों की। जो निहायत मुनासिब और फायदे की बात थी उस तरफ तुमने ध्यान नहीं दिया। सोचा था कि पूजा करते करते मालिक को पा जायेंगे मगर रसायत में यानी निचली खानों में जा पड़े और इसी गलत ज़याल के जाल में फंस कर अपना अनमोल जीवन बरबाद कर लिया।

महात्मा और आप में सिर्फ इतना फर्क है कि वह परमात्मा जो आप में भी है और उस में भी, वह आप में तो गुप्त है मगर उस में प्रज़्ट है:-

सज्बो घट मेरे साइयां सुंनी सेज न कोये॥
बलहारी तिस घट के जा घट परगट होये॥

महात्मा ने अपनी आत्मा को मन इन्द्रियों से ऊपर ला कर तजरबा कर लिया और परमात्मा को प्रज़्ट कर लिया। हम ने नहीं किया और जब तक यह मुअज़्मा हल न हो, भ्रम कायम रहता है और यह मुअज़्मा हल कहां होगा? गुरु के पास जा कर, किसी जागते पुरुष की सोहबत में जाने से।

सो स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि प्रेम तूने गुरु से करना था जिस से यह मुअज़्मा हल होता। यों तो हम ने अपने प्यार और मोहज़्बत की दौलत कई जगह लुटाई मगर बेसूद ज़्योंकि इस से हमारी अधोगति का सामान बन गया। यह जो ज़िंदगी का बेशकीमती वक्त हमें मिला है इस की कीमत का अंदाज़ा कौन कर सकता है? एक पल करोड़ों अशर्फियों से ज्यादा कीमती है। इस की कद्र उस से पूछो जो एक एक सांस के लिए तरसता है और वह सांस हम किस बेदर्दी से ज़ाया (नष्ट) कर रहे हैं।

सिकंदरे आज़म के पास कुछ नजूमी (ज्योतिषी) आये। सिंकदर ने पूछा, अच्छा बताओ मेरी मौत कौन सी तारीख को आयेगी? और किस तरह? नजूमियों ने जवाब दिया, तेरी मौत उस वक्त होगी जब धरती लोहे की और आसमान सोने का होगा। सिंकदर को बादशाहत का नशा चढ़ा हुआ था। वह कब यकीन करता। समझने लगा कि न कभी धरती लोहे की होगी, न मेरी मौत आयेगी। बात आई गई हो गई। आखरी दफा हिन्दुस्तान से लौटते हुए एक लक दोक मैदान में कड़कती धूप की गर्मी में उस की तबीयत खराब हो गई। सिर्फ वज़ीर साथ था, बाकी साथी बहुत पीछे रह गये थे। सिंकदर ने वज़ीर से कहा, मुझे कहीं लिटा दो। अब वहां न तो कोई कपड़ा था, न बिस्तर, न साया। वफादार वज़ीर ने झट घोड़े से उतर कर अपनी लोहे की ज़र्रा बज़्तर उतार कर बिछा दी और सिकंदर को लिटा दिया। देखा तो धूप सिकंदर के मुंह पर पड़ रही थी, झठ अपनी सोने की ढाल हाथ में लेकर छतरी की तरह बादशाह के सिर पर कर दी। बादशाह ने देखा कि ऊपर सिर पर सोने का आसमान है और नीचे ज़मीन लोहे की। नजूमी की पेशीनगोई (भविष्यवाणी) याद आई। समझ गये कि मौत की घड़ी आ गई। कुछ देर बाद शाही हकीम आ पहुंचा। हकीमों से कहा, मुझे सिर्फ इतनी देर ज़िंदा रख लो कि मैं घर पहुंच जाऊं। वे बोले, यह हमारे वश की बात नहीं। सिकंदर ने कहा, मेरी आधी बादशाहत ले लो। हकीमों ने कानों पर हाथ धरा। यहां तक हुआ कि सिकंदर ने अपनी सारी बादशाहत देने को कहा सिर्फ इतनी देर की ज़िंदगी के लिए जितने वक्त में वह घर पहुंच जाये। हकीमों ने कहा, शहंशाहे आलम यहां कुदरत का वह ज़बदरस्त कानून काम करता है कि दुनिया भर का कोई आला नजूमी या हकीम इस में तिल भर की भी रद्दो बदल नहीं कर सकता और सारी दुनिया की बादशाहत के बदले एक सांस भी ज्यादा बढ़ाने की न तो कोई दवा है, न ताकत या मजाल या गुंजायश है, हम बेबस हैं।

आप ने देखा यह है एक सांस की कीमत। ऐसा बेशकीमत वक्त हम भ्रम में बरबाद कर रहे हैं। थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाये कि दुनिया की चीज़ें अच्छी, बाल बच्चे अच्छे, जायदादें अच्छी मगर उन की कीमत ज़्या है? आंख बंद की और सब सपना हो गया। उन में कोई चीज़ तुज़्हारे साथ जाने वाली भी है? साथ ज़्या जायेगा? वे पाप साथ जायेंगे जो तुम ने इन सब चीज़ों को हासिल करने के लिए किये। जब तक ज़िंदा रहे हम मिट्टी में खेलते रहे, तत्वों में खलबली मचाते रहे। ज़्या आलिम, ज़्या फाज़िल सब की एक सी गति है। ज़्या आलिम और ज़्या फाज़िल सब इन्द्रियों के घाट पर कलाबाज़ियां लगा कर कहकहे मारते रहे। यह नर तन, यह मनुष्य जीवन जिस का मकसद था अपने को पहचानना और परमात्मा को पाना वह यों ही भ्रम में बरबाद कर लिया।

संतों का उपदेश सब के लिए है। वे नहीं कहते कि घरबार, दुनिया, समाज छोड़ कर जंगलों में चले जाओ। वे कहते हैं दुनिया में रहो, दुनिया के कारोबार करो मगर values of life, उस की इज़्तियाज़ी कीमत का एहसास भी तो करो। जिस चीज़

की जितनी कीमत है दानाई से उतनी कीमत लगाओ।

जो घर छड्डु गंवावणा तिस लग्गा मन माहिं॥
जित्थे जाये तुध वरतणा तिस की चिंता नाहिं॥

जिस्म छोड़ कर जहां जाना है उस का कोई ज़याल नहीं और दुनिया जो चार दिनों का मेला है, जो हम ने आखिर छोड़ जानी है वह हमारी जानो ईमान बनी हुई है, ऐसे आदमी को अकलमंद कौन कहेगा? अब आप ही अपने खिलाफ डिग्री दीजिए। इस लिए संत पुकार कर कहते हैं और हमारी आंख खोलते हैं। प्रभु से प्यार हो तो सब खलकत से जो उस की बनाई हुई है उस से खुद बखुद प्यार होगा मगर ऐसी हालत में जब हम अपने को भूले हुए, जब हम अपनी ही हकीकत से बेखबर जिस्म का रूप बने बैठे हैं वह प्यार बन नहीं सकता। ईश्वर को हमने देखा नहीं तो प्यार किस से करें? उस वक्त तक जब तक हम ने ईश्वर को नहीं देखा हमारे प्यार करने के लायक़ सिर्फ गुरु है। गुरु की महिमा बड़ी है। वह रूहानियत का दाता है, वह आत्म तत्व का दाता है। जिस तरह और साईंसों को हासिल करने के लिए थोड़ी सी योग्यताएं, qualifications चाहिएं, जिस तरह डाक्टरी सीखने के लिए F.Sc. पास करना ज़रूरी है ऐसे ही रूहानियत हासिल करने के लिए भी कुछ इब्तदाई चीज़ें ज़रूरी हैं। आला चालचलन, नेक पाक जीवन, रियाकारी न हो, मन में अहिंसक भाव हो, ज़याल पाक पवित्र हों, किसी का हक न मारो, किसी को फरेब न दो, किसी का दिल न दुखाओ, ज़्याल में भी किसी का बुरा न चाहो, qualifications (योग्यताएं) ज़रूरी हैं रूहानियत के हासिल करने के लिए।

आप कहेंगे हमारे पास वेद शास्त्र ग्रंथ पोथियां हैं। उन्हें पढ़ कर हम ज्ञान हासिल कर लेंगे। सच्ची बात तो यह है कि हम ज्ञान की पोथियां पढ़ तो सकते हैं मगर उन की रमज़ (ज़ाव) नहीं पा सकते जब तक कोई आमिल महात्मा न मिले, इन पोथियों की असलियत, इन का true import समझ नहीं आ सकता। फर्ज़ करो आप पोथियों का मतलब भी समझ गये तो इस से ज़्या फायदा ? मेरा मतलब है comparatively आत्म तत्व के लिहाज़ से महज़ एक असूल, एक थ्योरी समझने से ज़्या मिल गया? अगर यह समझ गये कि आत्मा मन इन्द्रियों के अधीन है, इसे मन इन्द्रियों की गुलामी से आज़ाद करना और परमात्मा से मिलाना है हमें, यह इंसानी ज़िंदगी का मकसद है तो यह तो महज़ थ्योरी है। ज़रा ठंडे दिल से गौर करने की बात है। ये किताबें तो जागते हुए इंसानों के जो ठोकरें खा कर खुद गिर जाते हैं, उन के तजरबात का निचोड़ हैं। अगर हम समझ भी गये यह बात, जब तक हमारी अंतर की आंख न खुले जिस से हकीकत रोज़े रोशन की तरह नज़र न आये तो हासिल ज़्या हुआ?

सत्संग की गर्ज़ है बात को समझना। इस से आगे महात्मा अपनी निगरानी में सामने बिठा कर साधन कराता है। मुअज़्मे (पहेली) को हल करने के लिए महज़ पढ़ना इसी तरह है जैसे डाक्टरी की किताबें पढ़ के हम नुस्खे तो याद कर सकते हैं लिहाज़ा महज़ (केवल) किताबें पढ़ कर हम डाक्टर नहीं बन सकते। इसी तरह महज़ रूहानी किताबों के पढ़ने से हम रूहानियत को पा नहीं सकते। इस के लिए हमें किसी रूहानी डाक्टर के पास जो सचमुच का डाक्टर है, जा कर समझना और तजरबा करना होगा। आज मज़मून ही ऐसा आ गया है, मैं कोशिश करूंगा इसे खोल कर वाजेह (स्पष्ट) करने की।

तो फरमाते हैं तेरा नर तन बिना गुरु के भ्रम में बीता जा रहा है। अब जो इस तरफ, रूहानियत के हासिल करने की तरफ लगे हैं वे ज़्या कर रहे हैं? अपराविद्या वाले महात्मा ज़्या सिखाते हैं कि नित नेम करते रहो, कीर्तन गाते रहो। गाने में थोड़ी बहुत मस्ती है मगर हासिल ज़्या हुआ? जो मिलता है यही कहता है पढ़ते रहो, कुरान, गीता, भागवत पढ़ते जाओ। पढ़ना ज़रूरी है, मैं नहीं कहता किताबें गैर ज़रूरी हैं। मैं तो कहता हूं कि हम खुशकिस्मत हैं कि जितने महापुरुष हो गुज़रे हैं उन सब के तजरबात के निचोड़ उन किताबों में हैं और उन के ही अकवाल, उपदेश, कलाम और बेहतरीन नसीहतों का मजमूआ (संग्रह) हैं जो किताबें हमारे सामने हैं लेकिन पहली बात तो यह है कि हम इन किताबों के असल मफहूम true import (सही भाव) को नहीं समझ सकते जब तक कोई आमिल महात्मा न मिले और समझ भी आ जाये तब भी जब तक उन का तजरबा न बने, अपना अनुभव न बने,

ज़ाति तौर पर इस का तजरबा न हो तो किस काम का ? मैं फिर खोल कर कहना चाहता हूं कि स्वाध्याय ज़रूरी है ज़्योंकि इन किताबों से गवाही मिलती है कि जिस चीज़ की हमें तलाश है वह हमारे अंदर है लेकिन इन किताबों की असलियत किसी आमिल के पास जाने ही से समझ आ सकती है। अगर समझ भी आ जाये तो भी काफी नहीं। जिस चीज़ का किताबों में ज़िक्र है उसे हम ने पाना है, उस का तजरबा करना है। जब तक यह न हो, पढ़ना बेकार है।

पढ़िये जेते बरस बरस पढ़िये जेते मास॥
पढ़िये जेती आरजा पढ़िये जेते सास॥

और आगे चल कर कहते हैं:-

नानक लेखे इक गल्ल होर हौमे झख्खण झाक॥

फिर कहते हैं:-

नानक काग़ज़ लख्ख मणां पढ़ पढ़ कीजे भाओ॥
मस्सु तोट ना आवई लेखे पवन चलाओ॥

फरमाते हैं ऐ मालिक, तेरी गति और है, बयान बयान ही है, असलियत तो नहीं। पढ़े जाओ, अव्वल तो उस के मायने नहीं समझ सकते, पढ़ते चले जाओ । बना ज़्या ? ज़रा ठंडे दिल से विचार करो, हम यहां कशमकश में नहीं बैठे, हम यहां ठंडे दिल से एक बात को समझने के लिए इकट्ठे हुए हैं।

गोसाईं तुलसी दास रामायण में कहते हैं:-

दादुर धुनि चहुं ओर समाई।
वेद पढ़ें जिमी बटो समुदाई॥

महात्मा बाज़ वक्त सज़्त लज़्ज़ इस्तेमाल करते हैं। जब हकीकत का नाश होते देखते हैं तो शानें झंझोड़ झंझोड़ कर दुनिया को जगाते हैं। यहां वेद मंत्र रटने को मेंडकों के टर्राने के साथ तशबीह (बराबरी) दी है। शास्त्रों, पोथियों को पढ़ पढ़ कर झूमने से ज़्या हासिल है ? उन में ज़्या है ? उन में उन ऋषियों के कलाम हैं जिन्हें अंतर में परमात्मा के दर्शन हुए। शादी तो उन की हुई, झूम हम रहे हैं।

जंज पराई अहमक़ नच्चे

यह निंदा नहीं, न यहां स्वाध्याय की मुखालफत से गर्ज़ है। मैं यहां मज़मून को खोल कर बयान करना चाहता हूं। पढ़ने लिखने की ज़रूरत है, इस से शौक़ पैदा होता है मगर खाली पढ़ पढ़ कर सिर मारना काफी नहीं। किताबों में सिर्फ ज़िक्र है हकीकत का, उस की झलक नहीं। ताकत की किताबें पढ़ कर ताकत का एहसास नहीं होता। पहलवान को देख कर ताकत का एहसास होता है, शौक़ पैदा होता है पहलवान बनने का। इस तरह साधु या संत के पास बैठ कर हमें परमात्मा से मिलने का चाव पैदा होता है।

उपजे चाओ साध के संग

एक और बात अर्ज़ करूं। यह स्टेज ऐसी है कि सच्ची बात कहनी पड़ती है यहां। किसी सच्चे महात्मा के पास पहुंचो, वहां ज़्या है ? वह मालिक के रस से लबरेज़ प्याले हैं, overflowing प्याले हैं, उन के मंडल में एक खास असर है, एक अजीब मस्ती है भई। यह भी काफी नहीं। हम हजूर जैसी हस्ती के मंडल में बैठे, उस का असर लेते रहे, वहां टिकाव नसीब हुआ, शांति मिली मगर हजूर जो फरमाते हैं उन का कहा न किया (इस मौका पर बारिश उतर आई और शामियाने के बाहर बैठे लोग अंदर घुसने लगे)। आज हम खुशकिस्मत हैं कि भाई भाई गले मिल रहे हैं। दो बादशाह एक विलायत में नहीं रह सकते मगर सात फकीर एक गुदड़ी में समा जाते हैं। तो पढ़ना बेशक ज़रूरी है, theory precedes practice, मैं फिर यहां खोल कर बयान कर दूं ताकि भ्रम न रहे। हम बीसवीं सदी के लोग खुशनसीब हैं कि सब महापुरुषों के कलाम (वचन) हमारे सामने हैं मगर अंतर के तजरबे में जो रुकावटें रास्ते में पेश आती हैं उन्हें दूर करने के लिए आमिल की मदद और रहनुमाई की ज़रूरत है। पढ़ कर शौक़ पैदा हो सकता है मगर खाली पढ़ना काफी नहीं:-

हम नशीनी साअते बा औलिया
बेहतर अ़ज सद साले ताअत बेरया

जागते पुरुष की सोहबत का एक लज़्हा सौ साल की नेक पाक पवित्र ज़िंदगी के साथ की हुई रियाज़त से बेहतर है। ज़्यों ? ज़्योंकि सौ साल की तलाश से जो समझ नहीं आ सकती वहां उस हकीकत का निचोड़ cearcut (साफ) वाजेह सूरत में सामने आ जाता है। वहां हर शै (चीज़) की सही क़द्र कीमत का एहसास होता है मगर मैं अर्ज़ कर रहा था कि ऐसे की सोहबत भी मिल गई तो जब तक उस की हिदायत पर अमल न किया जाये पूरा फैज़ नहीं मिलता।

बुल्लेशाह की ज़िंदगी का वाकेया है। चालीस साल तक पढ़ते विचारते रहे हकीकत का राज़ न मिला। आखिर जब शाह ईनायत मुर्शिद मिले तो मुअज़्मा हल हुआ। किताबों पर कपड़ा बिछा कर आप उस पर बैठ गये। शरीयत वालों को नागवार गुज़रा (बुरा लगा) काज़ी मुल्लां बुल्लेशाह के पास आये और कहने लगे, तुम फकीर हो कर ग्रंथों की निरादरी कर रहे हो, यह बात ठीक नहीं। हम इस का तसफिया निर्णय) कराने आये हैं। बुल्लेशाह ने कहा, पहले मेरा फैसला कर दो। तुज़्हीं बताओ अगर एक आदमी इकरार करे कि मैं तुज़्हें कल मतलूबा शै (मांगी चीज़) दे दूंगा और फिर कल परसों कह कह कर चालीस साल तक टालता रहे तो उस की ज़्या सज़ा है ?

काज़ी ने फतवा दिया ऐसे आदमी को जो सज़ा दी जाये कम है। बुल्लेशाह ने कहा, ये ग्रंथ पोथियां मैं चालीस साल तक पढ़ता रहा इस उज़्मीद पर कि प्रभु मिलेगा मगर प्रभु न मिला जब तक मैं शाह इनायत के कदमों में न गया।

तो मतलब यह है कि जब तक हकीकत के राज़ जानने वाली हस्ती न मिले पूरा फायदा नहीं होता। ऐसे महात्मा तो हैं मगर बहुत कम। गुरबाणी ने निर्णय किया है इस का:-

कोट मधे कोई संत दिखाये
नानक तिन के संग तुरेया॥

सच्चा महात्मा कहीं कहीं मिलता है। जवाहरात कम हैं नकलें बहुत। आम साधु या तो अपराविद्या यानी पढ़ने लिखने, तप व्रत वगैरा में लगाते हैं या तंदुरुस्ती, कुव्वते इरादी (विचारशक्ति) को मज़बूत करने, ऋद्धि सिद्धि हासिल करने का साधन देने वाले होते हैं। कुव्वते इरादी और तन्दरुस्ती की किसी हद तक ज़रूरत है। ऋद्धि सिद्धि हासिल कर के इसे नाजायज़ तौर पर इस्तेमाल करने से हम परमात्मा से और भी दूर हो जाते हैं। आत्म तत्व का राज़ जानने वाले और इस का उपदेश देने वाले बहुत कम मिलते हैं। आप देखते हैं कोई पांच अग्नि ताप रहा है, कोई बाजू खड़ा किये हुए है। भई कसूर तो मन का है, जिस्म को ज़्यों सज़ा देते हो। सच्चा महात्मा मिले तो वह ज़्या करता है ? अब यहां एक और भ्रम पैदा होता है कि गुज़रे हुए महात्मा कोई मदद कर सकते हैं ? जिसे आपने आंख से देखा नहीं, जिन की किताब आज भी किसी आमिल की रहनुमाई के बिना समझ में नहीं आ सकती, जिस से आप बात नहीं कर सकते जो सामने है नहीं आप के वह आप का मुअज़्मा कैसे हल करेगा ? Past (गुज़रा हुआ) डाज़्टर ज़्या आप का इलाज कर सकता है, या गुज़रा हुआ वकील आप का मुकद्दमा लड़ सकता है, कोई मुश्किल पेश आये तो पोथी तो बोल नहीं सकती, मदद और रहनुमाई कौन करेगा ? सो गुज़रे हुए महात्मा आप की कोई मदद नहीं कर सकते। जो ग्रंथ पोथियां हैं वे सब ज़्या हैं ? वह खुदाई मदद की किताब के बेशुमार बेश बहा वर्क़ (पृष्ठ) हैं। They are so many pages of the book of God. कई पोथियां लिज़ी गईं पहले, कई और आगे लिज़ी जायेंगी। यह मज़मून हमेशा ताज़ा रहेगा, as fresh as ever. ज़रूरत मौजूदा महात्मा की है। Stephenson ने इंजन ईजाद किया, आज इंजन नहीं बन रहे ? मगर तुम इसरार करो कि Stepheson ही आ कर तुज़्हारे लिये इंजन बनाये तो ज़्या यह मुमकिन है। ऐसे महात्मा मिल भी जायेंगे तो जब तक उन की हिदायत पर अमल न करो पूरा फैज़ नहीं मिलता। रूहानियत का इल्म सीखने के लिए कुछ शर्तें ज़रूरी हैं। पहली शर्त है तालिब होना, दिल में ज़्वाहिश पैदा होना। अगर आप को ज़याल नहीं इस तरफ

का, तवज्जो कैसे होगी ? मौजूदा हालात से जो दुखी है, जिसे ठोकर लगे और दुनिया से जी उचाट हो ऐसे का दिल लगता है यहां। फिर दूसरी शर्त है उस्ताद मिले, उस्ताद भी कैसा ? जो आमिल हो पूरा। किताबों में ज़िक्र है मगर बिना आमिल के हकीकत का राज़ समझ में नहीं आ सकता, सब महात्मा ज़ोर दे कर कह रहे हैं यह बात:-

गुरु बिन भवनिध तरे न कोई।
जो विरंच निच शंकर सम होई॥

तुम ने मन इन्द्रियों से ऊपर आना है। बिना गुरु मन इन्द्रियों से ऊपर आने का रास्ता नहीं मिलता। यह अमल की चीज़ है। बाज़ लोग कहते हैं परमात्मा ज्ञान देगा। जब उन से पूछा जाये, कब देगा ? कैसे देगा ? और देगा भी या नहीं, इस की कौन गारंटी है ? तो उन का जवाब खामोशी होता है या लज़्ज़ी, बस परमात्मा ज्ञान देगा। ऐसे वचनों पर तकिया किये हुए हैं। तजरबा, यह न किया न करने का शौक़ है और सच तो यह है कि यह भरोसे का सबक भी या तो महज़ किताबी है या किसी तन्ज़ाहदार लैक्चरार ने रटवा दिया हुआ है जिन की राम लीक का दायरा इतना तंग है कि किसी आमिल हस्ती के पास जा कर तजरबा करना या सीखना उन के लिए एक ज़यानक फेल है, वे इस कानून से कतई बेबहरा (अनजान) हैं।

बिन सत्गुर बात न पाई कहत कबीर समझाई।

हमजिन्सियत इंसान का खासा है। आकाश में से कोई आवाज़ आये तो हम शायद सुन कर भाग जायें इंसान का उस्ताद इंसान है जो आप को अमली तजरबा करा दे सामने बिठा कर। ऐसा समर्थ पुरुष आप का मुअज़्मा हल कर सकता है। आज बीसवीं सदी है। करो और देखो। महात्मा के पास जाओ। वहां जा कर अपने शक शकूक रफा दफा करो। फिर जो हिदायत वह दे उस पर अमल करो, उस के वचनों पर फूल चढ़ाओ। यह है गुरु सेवा। ऐसा करने वाला इंसान मुराद हासिल कर लेता है।

गीता के चौथे अध्याय में लिखा है, "परमात्मा की तलाश है तो किसी पूर्ण महात्मा के पास जाओ, दंडवत कर के, उस से सवाल कर के अपने संशय निवारण करो, अपने मन की तसल्ली कर लो। जब पूरा विश्वास हो जाये तब गुरु की सेवा से हकीकत हासिल कर लोगे।" वह हकीकत ज़्या है ? कि हम जिस्म नहीं, हम आत्मा हैं। आत्मा मन इन्द्रियों के अधीन हो गई है। हम ने इसे मन इन्द्रियों से ऊपर ला कर अनुभव करना है यानी अपने आप को जानना है और फिर प्रभु को पाना है। आत्मा को मन इन्द्रियों से ऊपर लाना कहलाता है to be born anew. मौत का मरहला हल किया जाता है जो असल लज़्ज़ों में नया जीवन हासिल करना है।

किसी आमिल के पास बैठो जो मदद देकर उस चीज़ का अमली तजरबा करा दे। महात्मा तो ज़रूर मदद देगा और तब आप यह समझ सकेंगे कि सोलह संस्कारों में यह सब से ज़रूरी संस्कार है जिस को जीते जी हासिल कर के मौत का मरहला तय किया जाता है। यह असल लज़्ज़ों में नया जीवन हासिल करना है। महात्मा है तो थोड़ा बहुत एहसास करा देगा, फिर आगे उसे develop (बढ़ा) कर लो। इस लिए स्वामी जी फरमाते हैं, तूने अपना जीवन ज्रम में बरबाद कर लिया, भ्रम जिस का ऊपर जिक्र आ चुका है उसे दूर कर। जिस से हमेशा फैज़ मिलता है वह चीज़ तुझे गुरु के पास मिलेगी। मोह माया की निद्रा में सोये हुओं का इलाज जागता पुरुष ही कर सकता है। एक जागता पुरुष हज़ार सोये हुओं को जगा सकता है। बंधे हुओं को बंधा हुआ छुड़ा सकता है ज़्या ? जब तक कोई मुक्त पुरुष न मिले जो मन इन्द्रियों की कैद से आज़ाद है, जो मोह की नींद से जाग चुका है, न मिले तो हमारा मुअज़्मा हल नहीं होगा। मन इन्द्रियों से ऊपर आ गये और अंतर में परमात्मा के दर्शन कर लिये तो फिर कुदरती तौर पर सब से प्यार होगा।

(ख) दारा सुत परिवार, ठगियन संग ज़्यों खोवही।

स्त्री, बच्चे, दोस्त, रिश्तेदार इन में तेरा प्यार रहा, जिस्म और जिस्मानी ताल्लुकात के दायरे में ज़िंदगी बसर कर के चला गया, अपना मनुष्य जीवन बरबाद कर लिया। यह नर तन इस लिए मिला था कि अपने आप को जानता और परमात्मा से मिलता और यह चीज़ सिवाय गुरु के और कहीं नहीं होती। गुरु से मिला नहीं, उस से प्यार किया नहीं, मनुष्य जीवन यों ही गंवा दिया।

(फ) ज़्यों नहीं करत विचार, जग मिथ्या ये है सही।

अब कहते हैं, ऐ जीव, यह जितनी दुनिया की चीज़ें हैं कुटज़्ब, कबीला, बाल बच्चे , दोस्त, असबाब यह सब बदल जाने वाला हैं, मिथ्या यानी बदल जाने वाले हैं; तन मिथ्या, धन मिथ्या, फिर हकीकत की तलाश ज़्यों नहीं करता। हकीकत बदला नहीं करती। वह कहां है ? गुरु के पास। गुरु से प्यार करो, उस के पास जाओ भई। जाओ जहां कहीं भी तुज़्हें खबर मिले कि कोई महात्मा है उस के पास जाओ। तुम दो रोटी खाते हो, आंखें रखते हो और यह बीसवीं सदी का ज़माना है। महात्मा की परख यह नहीं कि वह कैसा लैज़्चर देता है। उस की सही परख है तजरबा और अनुभव। वहां जा कर देखो कि जिन लोगों ने उपदेश लिया उन का ज़्या बना ? देखो किसी की निरत खुली, अंतर में प्रकाश हुआ कि नहीं। मामूली मिट्टी का बरतन भी हम ठोक बजा कर खरीदते हैं। यहां ज़िंदगी का मुअज़्मा हल करने का सवाल तो उस से भी ज़्यादा अहम है। आंखों पर पट्टी न बांधे रहो। देखो, खुद तजरबा करो। जिन्हें नाम मिल चुका है उन के लिए मैं इतना ही कहूंगा वे अपना भाई समझ कर अपनी मुश्किल या रुकावट दूर कर लें। भाई के नाते जो सेवा मुझ से बन पड़ेगी मुझे उस से इंकार नहीं। महात्मा जब भी आये पुकार कर कहते रहे, clarion call देते रहे, भई जागो, अपनी आंखों से काम लो, होश संभालो। संत मत ज़्या सिखाता है ? अपनी आंखों से काम लो, सुनी सुनाई पर न जाओ। जहां कोई महात्मा है वहां ज़रूर जाओ, देखो वहां बैठने वालों का ज़्या बना ? हम आज गुरु साधु वगैरा लज़्ज़ों से मुतनफर हो चुके हैं। यह लज़्ज़ आज बहुत बदनाम हो चुके हैं। कारण, आज इन को रोज़गार का वसीला, means of livelihood बना लिया गया है। पंजाबी मिसाल है 'किसी ने खोती वाह लई किसी ने पोथी वाह लई।' कोई आमिल महात्मा मिल जाये तो उस की कद्र करो। फिर जो सबक दे उसे याद करो। यह जीते जी हासिल करने की चीज़ है। अगर अब कुछ नहीं होगा तो फिर कभी न होगा। गुरु का काम यह नहीं कि सबक दे कर किनारे हो गये। उस का काम है ज़ाति तौर पर तजरबा कराना।

(ब) मन है बड़ा गंवार मोह रहा कर प्यार छूटे कैसे जार से।

हमारे अंदर आत्मा भी है और मन भी। ये दो ताकतें हैं, एक positive (पोज़िटिव) दूसरी negative (नैगेटिव)। मन negative पावर है। वह CID है। बाहरी पूजा पाठ वगैरा में जहां मन बाहर भ्रमण करता है वहां तो वह आठ आठ घंटे तक बैठा रहेगा लेकिन इन्द्रियों के ऊपर आने की बात से वह घबराता है। वह जानता है कि बाहर पूजा पाठ में अंदर जाने की बात नहीं।

सो फरमाते हैं, मन गंवार है। गंवार वह जो हठ करे। यह मन इन्द्रियों के फैलाव में तो खुश है लेकिन अंतर्मुखी साधन ऐसे मन को स्थिर करने के जिन को समझता है अब मेरी मौत आ गई। महात्मा हठ के बावजूद मन को अंदर टिकाते हैं। आम लोग कहते हैं "जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे", अंदर जाओ और अनुभव करो लेकिन मन हठी है, अंदर जाने नहीं देता।

राजा परिक्षित के पास एक ज्योतिषी आया और कहने लगा, राजन! परसों कोई आदमी तेरे पास घोड़ा बेचने आयेगा, उसे हरगिज़ न खरीदना। अगर गलती से ज़रीद भी लिया तो उस पर सवार न होना। अगर सवार भी हो गये तो पूर्व की तरफ न जाना। अगर पूर्व की तरफ चले भी गये तो वहां एक सुन्दर स्त्री मिलेगी, उस से बात न करना। बात की तो शादी न करना। उस से ज्योतिषी यह कह कर चला गया। उस के बाद वही हुआ, एक आदमी निहायत खूबसूरत सफेद घोड़ा ले कर आया। दरबारियों ने कहा, महाराज! यह घोड़ा आप के अस्तबल का श्रृंगार बनना चाहिए। मुआफ करना हम अपनी अकल से काम नहीं लेते, दूसरों के कहने पर चलने के आदी हो गये हैं। राजा ने सब के ज़ोर देने पर घोड़ा खरीद लिया। कुछ रोज़ अस्तबल में बंधा रहा। लोगों ने कहा, यह आप की सवारी के लायक है। राजा ने दिल में कहा, ज़्या हर्ज़ है। पूर्व की तरफ नहीं जायेंगे। घोड़ा था मुंहज़ोर पूर्व की तरफ ले गया। वहां देखा कि एक सुन्दर जवान स्त्री रो रही है। राजा ने मन में सोचा बेचारी दुज़्िया है, ज़रा पूछ तो लें, ज़्या दुख है इसे। मन सदाचार का वास्ता देकर फरेब देता है, gentle-manly way में हमदर्द बन कर। राजा उस स्त्री के पास गया। वह बोली, मैं दुज़िया

हूं, मुझ पर बड़ा जुल्म हो रहा है, मुझे बचाओ, अपने साथ ले चलो। राजा ने कहा ज़्या हर्ज़ है, साथ ले चलते हैं, शादी नहीं करेंगे। वहां जा कर जी ललचाया तो उस से शादी कर ली। दिल में कहा शादी की है तो ज़्या, इसे काम में शामिल नहीं करेंगे। औरत एक दिन बोली, मैं बेकार बैठी तंग आ गई हूं, आओ यज्ञ करें। यज्ञ में दोनों इकट्ठे बैठे। दीनों, ऋषियों, महात्माओं की सेवा की। इतने में वह बोली, ये लोग जो यहां जमा हैं बदमाश हैं, मुझे बुरी नज़र से देखते हैं। राजा ने गुस्से में आ कर सब की गर्दन उड़ा दी।

तो बात यह है कि हम अपनी आंख कान से काम नहीं लेते, दूसरों की कही सुनी पर काम करते हैं। यह होश तब आती है जब बेड़ा गर्क़ हो चुकता है। सो कहते हैं, मन गंवार है, उस के कहने पर न चलो। जो गुरु कहे उस पर अमल करो।

(५) बिन गुरु चले न दाव, थाके सभी उपाय कर।

मन का काम है भ्रम, हीले, बहाने, चालबाज़ी, दाव, घात वगैरा। तो इस मन को वश करने के लिए बेशुमार उपाय किये जाते हैं लेकिन बेसूद पूरे गुरु के बगैर मन के दाव चल जाते हैं। हजूर पराशर ऋषि का वाकेया सुनाया करते थे। पूर्ण योगी हो कर आ रहे थे, गर्मी का मौसम था, सुबह का वक्त, सामने दरिया था। पार करने के लिए मल्लाहों की तलाश में गये। वे लोग रोटी खा रहे थे। कहने लगे, पार पहुंचा दो। मल्लाहों ने कहा, ऋषिवर हम रोटी खा लें तो छोड़ आयेंगे। ऋषि जल्दबाज़ थे। कहने लगे, "मुझे देर हो रही है, सूरज चढ़ रहा है। मैं शाप दे दूंगा।" मल्लाह बेचारे डर के मारे सहम गये। जो काम बड़े किया करते हैं उन की बच्चे भी कर लेते हैं। मल्लाहों की एक लड़की ने कहा, पिता जी मैं इन को छोड़ आती हूं। नाव में बिठाया और खेने लगी। लड़की जवान थी, ऋषि ने सारी उम्र किसी स्त्री का मुंह नहीं देखा था। डोल गये और अपना खोटा ज़यात प्रज़्ट किया। लड़की ने कहा, देखिये कहां मैं और कहां आप? मेरे शरीर से मछली की बू आती है। कहने लगे, तू योजन गंधारी हो जायेगी। तेरे शरीर से एक एक योजन तब खुशबू आयेगी। लड़की फिर कहने लगी, देखिये सूरज ज़गवान देखता है। चुल्लू में पानी भर कर आसमान की तरफ डाला, धुंध छा गई। लड़की ने कहा देखिये, जल देवता देज़ता है। फिर चुल्लू में पानी ले कर दरिया में डाला। वहां सब रेत ही रेत आ गई। योग की सिद्धियां शक्तियां ज़ाया कर दीं लेकिन मन को वश में नहीं किया। उस मछुवारी के पेट से व्यास देव पैदा हुये। पूरा गुरु किया होता है मन वश करने की युक्ति आती है।

सत्गुर देखेया दीखेया लीनी॥

सत्गुरु को देखो, उस के दर्शन करो, उस से दीक्षा लो। जो युक्ति वह बताये उस पर अमल करो और अपने आत्म को चीन्हो। यह काम बिना पूरे गुरु के नहीं होगा। न किताबों से न तीर्थों पर जाने से। बगैर सत्गुरु की सहायता के मन के दावों घातों से छुटकारा नहीं मिलेगा। पिंड से ऊपर लाना मज़ाक नहीं।

ज़ल्क़ रा अज़ बंद संदूक फसों

कि खरंद जुज़ अंबया मरसलों

ऐ खुदा बिमार कौम रहम मंद

ताज़े संदूक़ बदन मारा खज़ंद

ऐ परमात्मा, दयाल पुरुषों को भेज ताकि इस जादू भरे संदूक यानी इस जिस्म से मुझे छुड़ायें। यह आमिल का काम है, रूहानियत की दात उस से मिलेगी और कहीं नहीं। लोगों ने पढ़ने पढ़ाने, तीर्थ, व्रत, दान, यज्ञ, तप वगैरा में कोई कसर नहीं छोड़ी।

(६) नाम संभारो मीत, धीरज धर घट में रहो।

नाम मिले तो ज़्या करो? बाहर से हट हटा कर घट में (जिस्म) में बैठो, घट में आंखों के पीछे जहां आत्मा का मरकज़ (ठिकाना) है वहां अपनी तवज्जो को टिकाओ। वहां नाम है, वहां धुन है, वह धुन माथे पर प्रज़्ट होती है:-

तेरे द्वारे धुन सहज की माथे मेरे जगाई॥

आर रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिए, यह वह आवाज़ है। जब तक सुरत सिमट कर ऊपर न आये नहीं मिलती।

काया अंदर मंगन चढ़े जोगी तां नाम पल्ले पाई॥

घट में बैठो, धुन से जुड़ जाओ। महात्मा तुम्हें contact देगा, ध्वनि से जोड़ेगा। महात्मा उस का नाम है जो दो तारें आपस में मिला दे। जो ज़ाति तौर पर अनुभव करा दे ऐसे का नाम महात्मा है जिस की महिमा से ग्रंथ पोथियां भरी पड़ी हैं।

(ख) मौज निहारो पीव, जो करी है सो सब भला।

गुरु ज़्या कहता है? घट में बैठो, वह घर कहां है जहां से पिंड से अंड में दाखिल होते हैं:-

दसवें निज घर वासा पाए॥

नौ दरवाज़े प्रज्ट हैं, दसवां गुप्त है। दो आंखों के पीछे वह दर है जहां बैठना है वहां बैठे रहो, धुन सुनते रहो, तुम्हारा काम बस इतना ही है, आगे गुरु का काम है।

आगे मौज निहारो पीव।

वहां बैठ कर इंतज़ार करो, मौज पर रहो, wait करो, यकायक महसूस करोगे कि पिंड से ऊपर आ गये हो। यह मामूली काम नहीं। योगी हज़ारों साल तप करते रहे। पांच मिनट भी टिक के बैठो तो देखोगे सारा जिस्म बेहिस (सुन्न) हो गया है। यह उस की दया है। हर तरफ से हट हटा कर यहां बैठो और इंतज़ार करो, light (लाईट) आ जायेगी, जिस्म बेहिस हो जायेगा। मैं यह अपने लफ़्ज़ नहीं कह रहा, स्वामी जी महाराज के लफ़्ज़ दोहरा रहा हूं। फरमाते हैं, चिज़ आई बात में कहता हूं। जहां सुनो महात्मा है, वहां पहुंचो, देखो वहां लोगों को ज़्या मिला? अगर कुछ नहीं मिला खाली formalisation यानी ज़ाहरी टीप टाप है तो उधर से मुंह फेर लो, revolt करो, ज़यादा बगावत करो। आज ज़माना बदल गया है। पिछले सब महात्माओं ने अपने तजरबे के राज़ ग्रंथों में लिख दिये हैं लेकिन इस चीज़ के आमिल नहीं मिलते। नकली और बनावटी महात्मा जो खुद आमिल नहीं यह कह कर टाल देते हैं कि पढ़ते जाओ, आगे फल मिलेगा। भई अब तक नहीं मिला तो आगे ज़्या मिलने की उम्मीद रखें। ज़्या मर कर मिलेगा? यह तो जीते जी का सौदा है।

मोयां होयां जे मुक्त देओगे तां मुक्त ना जानू कोयला॥

यह चीज़ किसी गुरु से मिलेगी। किसी ऐसे महात्मा से जो सचमुच का महात्मा है। सचमुच का महात्मा, यह लफ़्ज़ फिर बरतना पड़ा। ऐसे महात्मा की परख ज़्या है? खुद जाओ, अपनी आंखों से देखो, उस से थोड़ा बहुत नक़द तजरबा सिदक़ दिली से मांगो, वह देगा। सुनी सुनाई पर न जाओ।

(त) तेरी बुद्धि मलीन, मन चंचल घाटा गहे।

फरमाते हैं तेरी बुद्धि मलीन हो चुकी है। यह कितनी open talk (लाधड़क प्रवचन) है। यह कोई धड़ेबंदी की बात नहीं, true values of life, जिस चीज़ की जो कीमत है वही दी जा रही है। मन तो मलीन है वह अंदर न जायेगा। उस के कहने पर न लगो। अंदर बैठो उस दरवाज़े पर बैठो आंखों के पीछे जो दरवाज़ा पिंड से अंड को जाता है। Knock and the door shall be opend unto you. इस दर पे बैठो और दस्तक दो। खटखटाओ और वह ज़रूर खोला जायेगा। हजूर फरमाते थे, किसी अमीर के दर पर कोई बैठा हो तो उसे मालूम होता है कि मेरे दरवाज़े पर कोई मंगता या हाजतमंद बैठा है। वह मालिक शहंशाहों का शहंशाह है, उस के दरवाज़े पर बैठोगे तो ज़्या उसे मालूम नहीं होगा? Tap inside, वहां उस दर पर बैठो, प्यार से वक्त दो और मौज निहारो। कुछ इंतज़ार करो, वर्षों इंतज़ार की भी ज़रूरत नहीं। बस, तुम्हारा इतना ही काम है। आगे गुरु का और प्रभु का काम है।

(-) तू नहीं जाने भेद, भ्रम जाल में फंस रहा।

फरमाते हैं ऐ इंसान, तू असली राज़ नहीं जानता ज़्वाह-मज़्वाह भ्रमों में भटक रहा है। एक भ्रम, दो भ्रम, सब का ज़िक्र आया पहले (इस मौके पर बारिश फिर तेज़ हो गई)। कोई फिक्र नहीं, बारिश खत्म हो जायेगी और सत्संग भी। जिस्म भीग जायेगा तो ज़्या परवाह है। हम यहां आत्म विचार में बैठे हैं।

(व) याते कर विश्वास, गुरु बिन और न दूसरा।

स्वामी जी महाराज की बाणी clear cut है साफ दो टूक। ऊपर जो बातें कह आए हैं उन का हवाला देकर कहते हैं, इस लिए पूर्ण विश्वास करो कि बिना गुरु आत्म तत्व का इल्म नहीं मिलेगा। यह पूर्ण पुरुष के लफ़्ज़ हैं कि विश्वास रखो। सचमुच सिवाय गुरु के यह दौलत और कहीं नहीं मिलेगी।

(क्क) गुरु का घाट निहार, सुरत बांध निज शज़्द में।

अब फरमाते हैं ज़्या करो ? गुरु के घाट पर बैठे देखते रहो। गुरु का घाट ज़्या है ? आंखों के पीछे दसवां दर जिस दर की हमें कोई खबर नहीं, जिस की खबर हमें गुरु देता है।

ओथे अनहद शज़्द वजे दिन राती
गुरमज़ी शज़्द सुणावणेयां॥

वहां ध्वनि है। वहां निरत भी और शज़्द भी खुल जायेगा। लोग कहते हैं महात्मा अपना राज़ (भेद) छिपाते हैं, कितनी भूल है उन की जो ऐसा कहते हैं। वे तो खोल ज़ोल कर बयान करते हैं। जितनी बाहर कशमकश बढ़ेगी, लोगों की जितनी रूहानियत से ला परवाही बढ़ेगी उतना ही महात्मा खोल खोल कर एक एक चीज़ वाजेह (स्पष्ट) करते रहेंगे और मदद देंगे। हजूर फरमाते थे, गुरु पर्देदार औरत की तरह है जो बच्चे के लेने को बाहर नहीं आ सकती लेकिन बच्चा दरवाज़े के पास पहुंच जाये तो वह हाथ पकड़ कर उसे अंदर खींच लेगी। यहां दो आंखों के पीछे गुरु का घाट है। वहां पहुंचो, वह आप खींच लेगा।

(क्ख) शज़्द बना कोई नाहीं, जो काढ़े इस पिंड से।

अब फरमाते हैं कि यहां दो आंखों के पीछे गुरु के घाट पर निरत खुलेगी, यहीं शज़्द खुलेगा। बिना शज़्द के कोई दूसरा रास्ता नहीं पिंड से ऊपर आने का।

बिन शज़्द उपाओ दूजा॥

काया का छूटे न कूजा॥

शज़्द बिना सुरत आंधरी कहो कहां को जाय॥

इस जिस्म के जाल से ऊपर लाने का शज़्द के बिना कोई रास्ता नहीं दूसरा। यह अमली साईंस है। कहते हैं, यहां किवाड़ है दो आंखों के पीछे, इस दर पर कुंजी मिलेगी शज़्द की। वह कुंजी गुरु से मिलेगी।

गुरु कुंजी पाहु निवल मन कोठा तन छज़्॥
बिन गुर मन का ताक न उघड़े अवर न कुंजी हत्थ॥

बाहर फलदार दरज़्त, अगर उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया जाये तो फल तो लाते हैं लेकिन अगर साईंटिफिक तरीके से उन्हें खुराक दी जाये और उन की देखभाल की जाये तो वक्त के पहले और बहुत ज्यादा तादाद में फल लाते हैं। अगर बाहर इस चीज़ की ज़रूरत है तो ज़्या अंदर यह मदद दरकार नहीं ?

जिस का घर तिस दिया ताला

कुंजी गुरु सौंपाई॥

मालिक ने ताला लगा दिया है और उस की कुंजी गुरु के हाथ सौंप दी है (बारिश फिर शुरू हो गई ज़ोर से)। हर चीज़ की अपनी कीमत है। जिस्म कपड़ों से ज्यादा कीमती है और जिस्म से ज्यादा आत्मा। सिर्फ कपड़े ही भीगेंगे हमारे। एक बार हजूर लाहौर आये। इतने ज़ोर की बारिश उतरी कि चांदनी वगैरा, सब गीली हो गईं। मैंने कहा हमारे जिस्म ही भीगेंगे, ज़्या हर्ज़ है। सब बैठे रहे। यह सिर्फ ज़्याल है। कपड़े भीग गये तो ज़्या। आत्मा को बचाना है।

(क्फ) ताते शज़्द किवाड़, खोलो गुर कुंजी पकड़।

सिर की तरफ इशारा कर के कहते हैं कि यह महल है परमात्मा का। यहां आंखों के पीछे गुरु के घाट पर देखते रहोगे तो इस महल में उतर जाओगे।

(क्ब) महल माहीं धंस जाये, गुरमुख को रोके नहीं।

बाहरी विचारों में जो गर्क़ न हो, जिस का मुंह गुरु की तरफ हो, उसे कोई मुश्किल नहीं। महल में दाखिल होने के लिए जो बाहरी ममता मोह में फंसा हुआ है उसे मुश्किल है। गुरमुख अपने आप को हवाले कर देता है गुरु के। कहता है जहां ले जाता है ले चल। मेरे पास बहुत आते हैं जिन्हें घबराहट होती है रूह सिमटते वक्त। सो गुरमुख हो कर ही अंदर जा सकता है। जिस को जागता पुरुष मिल गया रहनुमाई और मदद करने के लिए और उसे सिदक़, विश्वास और भरोसा हो गया गुरु पर, उसे कोई रुकावट नहीं।

(क्भ) मनमुख भटका खाये, चढ़ उतरे गिर गिर पड़े।

कहते हैं जो गुरमुख नहीं, जो मनमुख वे चढ़ते हैं, फिर गिरते हैं। इस तरह बार बार चढ़ते गिरते रहते हैं। गुरमुख कहता है चल भई। वह छलांग लगा देता है अंधेरे में उस बच्चे की तरह जिसे विश्वास है कि आगे मेरा पिता खड़ा है संभाल के लिये और छलांग लगा देता है। यह मनमुख का रास्ता नहीं। इस इशारे को आमिल ही समझेंगे। जब ऊपर चढ़ता है तो जिस्म का ज़याल फिर नीचे ले आता है।

(क्म) ठेका ठौर न पाये, ज्योंकर गुरु समझावहीं।

कहते हैं अब इस जगह दो आंखों के पीछे जो ठीक ठिकाना है, दो ज़वों के दरमियान, नासिका के अग्र भाग यानी बिल्कुल दरमियान दो आंखों के पीछे, यहां जो ठिकाना है उसे तू पाता नहीं, ज्यों ? कि मन वहां टिकता नहीं, ज़रा टिका, फिर उखड़ा। मन टिके तो रास्ता मिले। आप का काम है सिर्फ देखना जिस्म का ज़याल छोड़ दो। यहां उस ठिकाने पर देखते रहो, इंतज़ार करो, Wait, मौज निहारो और बस, वह पावर है वह ज़रूर खींचेगा। जब तक दुनिया से मन न हटे, नेक पाक जीवन नहीं, यहां रसाई नहीं। हजूर फरमाते थे वह ताकत अभुल्ल है, जब तक जीव को फिट न देखे रास्ता नहीं देती।

(क्य) मन मत छोड़े नाहीं, गुरु को दोष लगावही।

कहते हैं तू मनमत छोड़ता नहीं, मन मानी करता है। गुरु कहता है, गुरु के घाट पर बैठे रहो, मौज निहारो। यह बुद्धि विचार में पड़ा है कि यह ज़्यों, यह ज़्यों। तुज़्हारा काम है यहां बैठ कर देखना। देने वाली ताकत और है। ऋषियों मुनियों ने सैंकड़ों वर्ष गुज़ार दिये पिंड से ऊपर आने की कोशिश में। कई बार ऐसा भी होता है कि मिंटों में पिंड से ऊपर आ जाते हैं।

गुरु मरता नहीं, वह दोनों मंडलों में काम करता है। बाहर भी, अंदर भी, तुम बैठो, वह संभाल करेगा, संभाल अवश्य होगी।

(क्र) गुरु जो कहें उपाय, उस में मन बांधे नहीं।

गुरु जो उपाय बतलाता है उस पर यह मन तवज्जो नहीं देता, उस पर अमल नहीं करता, फिर कामयाबी कैसे हो ? शुरू शुरू में आंख बंद कर के हर बात माननी पड़ेगी। जैसे स्कूल में पहले 9x9=81 होते हैं यह मानना पड़ेगा। आगे चल कर कालेज में इस के मायने भी समझाये जाते हैं कि 9x9=81 ज़्यों होते हैं लेकिन शुरू में तो इसे मुसल्लमा अमर मानना पड़ता है। हर बात का जवाब है। वह बुद्धि वालों के लिए है जो देर में जाना चाहते हैं, बाकियों के लिए है सिर्फ दर पर बैठना। आगे अंदर से मदद आयेगी। गुरु पावर बड़ी ज़बरदस्त है। गुरु और ईश्वर एक होते हैं मगर सचमुच का गुरु हो, not so called gurus (ढ़ोंगी गुरु नहीं)। लोग डरे हुए हैं धोखेबाज़ों से। इस लिए अर्ज़ कर रहा हूं नकद तजरबा करो, अपनी आंखों से देखो। देखो कि महात्मा के पास जाने वालों का ज़्या बना ? सब लोग झूठ नहीं कह सकते।

(क्-) ज्योंकर होये निबाह, जन्म जन्म धक्के खावत फिरे।

जब तक गुरु के वचनों पर फूल नहीं चढ़ाता, मकसद हासिल नहीं होता। वह नहीं कहता कि मर के मिलेगा। वह कहता है कि करो और देखो, जीते जी देखो। थोड़ा तजरबा अपने सामने बिठा कर करा देता है। आगे खुद develop (बढ़ाओ) करो, मैं तो यही कहूंगा कि जो बिठा के पहले दिन तजरबा करा दे वह महात्मा है। सो कहते हैं बिना गुरु तुम कैसे निबाह कर रहे हो? How you can afford to continue these fruitless efforts? गुरु मिला नहीं, जीवन भ्रम में बरबाद हो रहा है, आखिर यमों के हवाले होना पड़ेगा।

(ख) राधास्वामी कहत सुनाये, मन बैरी को मीत कर।

आखिर आगे स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, मैं समझा कर एक बात बताऊं। मन खड़ा न हुआ तो बात न बनेगी। इसे तुम दुश्मन समझते आये हो, मित्र बना के काम ले लो। कितना भी हठी हो, प्यार से काम लो तो मान जायेगा। हठ से काम लोगे तो वह पूरा ज़ोर लगायेगा। जो कशमश के सामने आकर लड़ना चाहे तो यह मन बड़ा बली है। सो प्यार से काम लो भई। थोड़ा भजन कर ले, अभी तुझे रोटी देंगे। स्वामी जी महाराज ने यहां बड़े पते की बात कही है। दुश्मन की भी तारीफ करो तो वह ज़ाहिर दुश्मनी नहीं करेगा, दरपर्दा चाहे मुखालफत की बात करे। बाहर सैर करने जाओ तो वहां भी मन को प्यार से समझाओ कि साथ साथ ज़रा प्रभु की याद भी होती रहे तो ज़्या हर्ज़ है। तो स्वामी जी फरमाते हैं, मन हठीला है, हठ से काबू नहीं आयेगा। इसे मित्र बना कर काम ले लो। रास्ते में लिखा हो दूसरी तरफ मत पढ़ना, हम ज़रूर पढ़ते हैं। सो लुब लबाब (सार) इस शज़्द का यह है कि बिना गुरु के तेरा भ्रम नहीं मिटेगा। यह काम गुरु के पास जाने से ही होगा, उस का नाम कुछ रख लो। आमिल होना चाहिए जो सामने बिठा के ज़ाति तौर पर यह तजरबा करा दे। इकरार करने वाला नहीं, आज मिलेगा, कल मिलेगा, मर कर फल मिलेगा। जो थोड़ा बहुत तजरबा पहले ही दिन को सामने बिठा कर करा दे। आगे खुद develop कर लो।

सो स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि मन से सज़्ती न करो। उसे मित्र बना कर काम ले लो। पागल से भी मित्रता करो तो फिर मान जाता है। मन को थोड़ा मित्र बना लो और इस तरह थोड़ा गुरु का काम कर लो। प्यार से मन मान जायेगा, हठ से नहीं।

****